ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-06, June 2023

# बिरहोर जनजाति (छ.ग.) : समाज एवं अर्थव्यवस्था

डॉ. पी.एल. चन्द्राकर
डी.लिट.
विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग
सी.एम.दुबे स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बिलासपुर (छ.ग.)

## सामान्य परिचय :

बिरहोर या बिरहुल छत्तीसगढ़ राज्य की एक विशेष पिछड़ी जनजाति हैं। निवास के आधार पर इस जनजाति के दो उपवर्गो में विभाजित किया गया है प्रथम उथलू बिरहोर जो अपने रहने का जगह बदलते रहते है तथा द्वितीय जघीस बिरहोर जो बस्तियों में स्थायी आवास में रहते है।

छत्तीसगढ़ में इस जनजाति के लोग मुख्यतः कोरबा, रायगढ़, जशपुर और बिलासपुर जिले में निवास करती है। सन् 1971 से 1981 के दशक में इनकी जनसंख्या घट गयी थी। इसीलिए सरकार ने इस जनजाति को संरक्षित जनजाति घोषित की थी इनका परिवार नियोजन प्रतिबंधित की थी।

प्रदेश में सन् 1961 में इस जनजाति की कुल जनसंख्या 497 थी जो पांच दशक बाद सन् 2011 की जनगणना में लगभग 6 गुना बढ़कर 3104 हो गयी (सारणी–1) थी। इस दशक में इनकी औसत साक्षरता दर लगभग 30 प्रतिशत थी जो राज्य के औसत एवं जनजातीय साक्षरता औसत से कई गुना कम है। इस जनजाति समूह में प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों का औसत अनुपात 1034 थी।

**सारणी : 1 छत्तीसढ़ : बिरहोर जनजाति की जनसंख्या वृद्धि दर, 1961–2011**

| क्रं. | दशक | जनसंख्या | वृद्धिदर % मे |
|---|---|---|---|
| 1 | 1961 | 497 | ——— |
| 2 | 1971 | 738 | 48.49 |
| 3 | 1981 | 484 | 34.41 |
| 4 | 1991 | 1538 | 217.76 |
| 5 | 2001 | 1744 | 13.39 |
| 6 | 2011 | 3104 | 77.98 |

इस विशेष पिछड़ी जनजाति का विशिष्ट विकास पहाड़ी कोरबा विकास प्राधिकरण जशपुर नगर के माध्यम से किया जा रहा है।

## आवास :

बिरहोर कोलारियन समूह की जनजाति हैं। प्रदेश में इस जनजाति का उथलू या घुमन्तु समूह घने जंगलों में 8–10 घरों की झोपड़ी बनाकर रहते है जहां प्रायः पेय जल, स्वास्थ्य, विद्युत, सड़क इतयादि सुविधा नहीं होती है। इस समूह के लोग शिकार एवं वनोपज कम मिलने पर अपना आवास दूसरी जगह में (कुरहा या कुरिया) बनाकर रहते हैं।


Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-06, June 2023

इस जनजाति का जघीस समूह बस्तियों में पारा या टोला में निवास करते है। ये लोग शासकीय आवास योजना का लाभ उठाकर अब पक्के मकान में रहने लगे है तथा स्थायी कृषि करने लगे है किन्तु परम्परागत व्यवसाय रस्सी बनाने का कार्य अभी करते है।

**व्यवसाय**

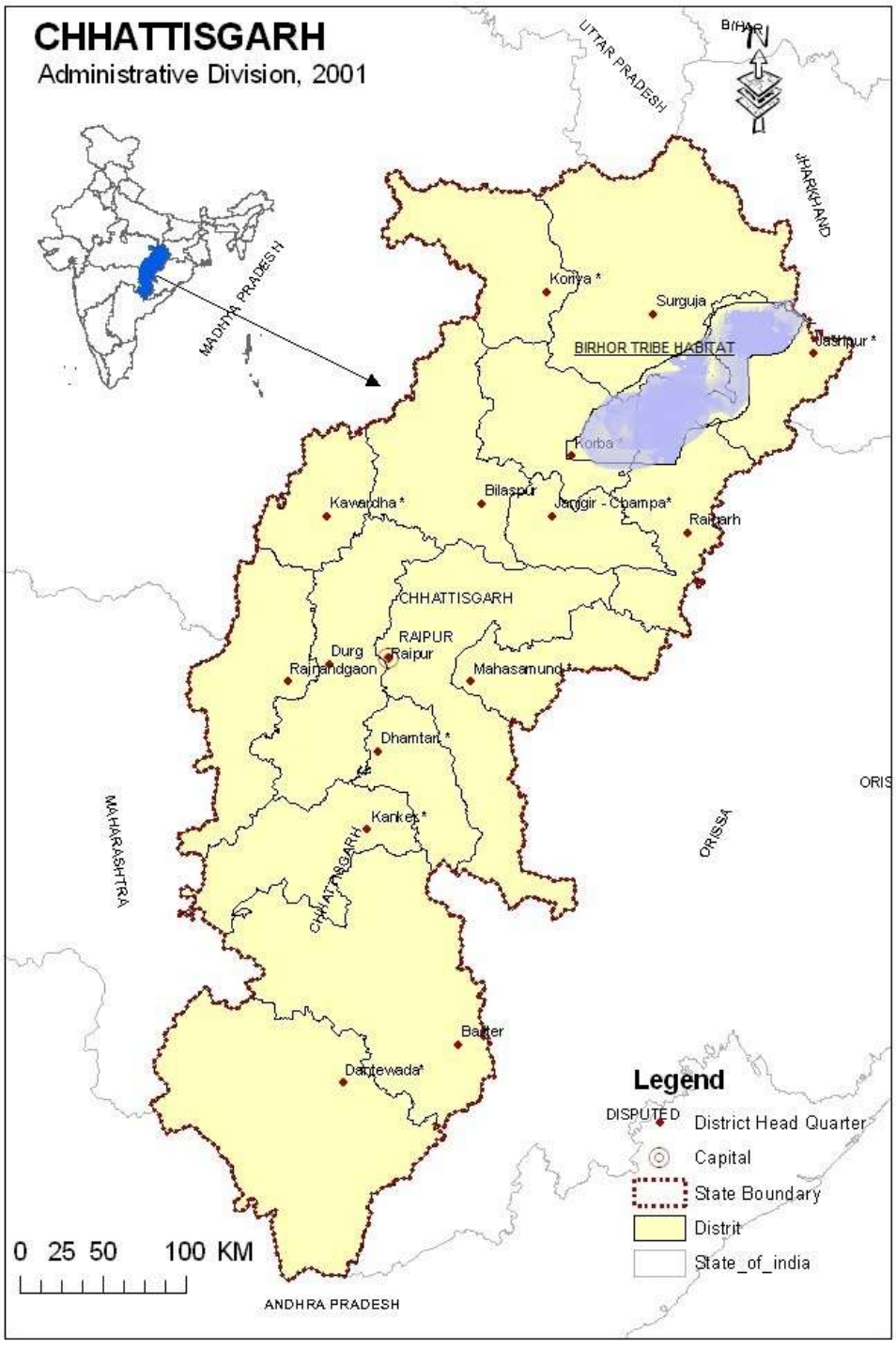


Map No. 1


Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-06, June 2023

**व्यवसाय :**

रस्सी निर्माण, शिकार, वनोपज संग्रह तथा कृषि व गृह कार्यों का उपकरण निर्माण इनका परम्परागत व्यवसाय है।

बिरहोर लोग प्रदेश के अन्य जनजातियों से भिन्न बंदर का शिकार करते है और उसे खाते एवं बेचते है। इसीलिए इनके बारे में कहा जाता है कि बिरहोर जिस वृक्ष को छू देते है उसमें बन्दर कभी नहीं चढता है। बन्दर एवं अन्य जानवरों का शिकार ये लोग जाल एवं लाठी द्वारा करते है।

इस जनजाति का प्रमुख व्यवसाय रस्सी बनाना, एवं गृह कार्य के लिए आवश्यक उपकरण जैसे बहिंगा, बेठ, मूसल, हल, ढोलक आदि बनाकर गांव गांव या बाजार में बेचकर आय अर्जित करना है। इसीलिए इनका एक समूह जंगल में कच्चा माल की प्राप्ति के लिए निवास करते है। इस प्रकार यह जनजाति समाज की आवश्यकता की पूर्ति के लिए निर्माण कार्य करते है।

स्थायी निवास करने वाले बिरहोर लोग स्थायी कृषि, मजदूरी एवं प्लास्टिक का रस्सी बनाने का कार्य करते है। इसके अलावा मांस की आपूर्ति एवं आय के लिए मुर्गी, एवं बकरी का पालन करते है।

**भोजन एवं पेय पदार्थ :**

बिरहोर लोग मांसाहारी एवं शाकाहारी दोनो होते है। बन्दर का मांस इनको प्रिय है। ये लोग उसका शिकार एक विशेष प्रकार के जाल से करते है। इसके अलावा ये लोग जंगली कंदमूल, फल फूल एवं पत्ते खाते है।

पेय पदार्थ के रूप में ये लोग हांडिया एवं महुआ का शराब पीते है। ये लोग मांसभक्षण एवं हांडिय प्रायः अपने प्रत्येक संस्कार में करते है। यद्यपि शासन द्वारा इनको न्यूनतम दर पर राशन सामग्री प्रतिमाह प्रदान किया जाता है, किन्तु इनके अधिकांश लोग पर्याप्त एवं संतुलित भोजन के अभाव में कुपोषित अवस्था में रहते है।

**सामाजिक व्यवस्था :**

इस जनजाति में समगोत्रीय विवाह वर्जित है। ये लोग चार प्रकार के विवाह करते है। प्रथम टुकू जिसमें दोनो पक्ष की राजी खुशी से वर वधू का चयन किया जाता है तथा वधू मूल्य दिया जाता है तथा लड़की के मां को 'मायसारी' देते है।

द्वितीय उढ़रिया विवाह जिसमें लड़का लड़की अपने प्रेम प्रसंग से एक दूसरे को चयन करते है। तृतीय गोलत विवाह जिसमें लड़का एवं लड़की का विनिमय किया जाता है जिसे गुरावट विवाह कहते है तथा चौथ विधवा विवाह है। इस जनजाति में मामा फूफू विवाह अर्थात भाई अपने बहन की लड़का या लड़की से विवाह रचा सकते हैं।


Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-06, June 2023

बिरहोर लोग मृतक संस्कार में दस दिन में करते है। शव को दफनाते है। परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु होने पर पहले ये लोग पुरानी झोपड़ी को तोड़कर नया झोपड़ी बनाते थे। आजकल वह परम्परा लोग छोड़ते जा रहे है।

इनमें महिलाओं को मासिक धर्म एवं प्रसव के दौरान पृथक झोपड़ी में रखने की प्रथा है। इनका परिवार पितृसत्तात्मक होता है। उथलू एवं जघीस दोनों समूहों में रोटी बेटी का सम्बन्ध होता है।

बिरहोरों में बच्चों को जन्म देने की परम्परा कुछ अलग है। गर्भवती बिरहोर महिला जंगल में वृक्ष के नीचे प्रकृति के गोद में बच्चे को जन्म देती है।

**वस्त्र–आभूषण :**

ये लोग प्रायः गरीबी में जीवन यापन करते है। इसीलिए इनके पास ऋतुकाल के अनुरूप वस्त्रों का अभाव रहता है। शीतऋतु में ये लोग रात्रि आग जलाकर व्यतीत करते है तथा गर्मी के दिनों में वृक्ष के नीचे रहते है।

इस जनजाति में गोदना गोदवाना अनिवार्य नहीं है। ये लोग गरीबी के कारण सस्ते धातु का आभूषण पहनते है।

**पर्व उत्सव :**

प्रदेश के बिरहोर लोग कठोरी, हरेली, नवाखानी, कर्मा, सरिया, दिपावली, गोमहा होली इत्यादि त्योहारों को मानते है।

**देवी–देवता :**

बिरहोर लोग झाड़फूक एवं जादू टोना पर विश्वास करते है। किसी भी अनहोनी घटना या बिमारी की अवस्था में प्रथमतः उसका उपचार अपने स्तर पर करते है। किन्तु आजकल जागरूक हो रहे है और एलोपैथी उपचार भी कराते है। इनका प्रमुख देवी–देवता, सूर्य, मरी मसान (पितृदेव) बुढ़ी माई, पहाड़, वृक्ष बाबा दूरालू देव इत्यादि है। जागरूकता के कारण अब ये लोग गणेश बजरंगबली शंकरजी आदि देवताओं की पूजा करते है। बाबा दूरालू इनका शिकार का देवता है जिसे प्रतिवर्ष मूर्गा एवं पारियल भेंट करते है।

**निष्कर्ष :**

छ.ग. शासन एवं प्रशासन के निरन्तर प्रयास से बिरहोर लोग अब स्थायी आवास में निवास करने लगे है किन्तु अपने परम्परागत व्यवसाय रस्सी बनाना लकड़ी के उपकरण बनाना एवं वाद्य यंत्र बनाना अभी भी नहीं छोड़े है यद्यपि आजकल ये लोग मोहलाईन के बदले प्लास्टिक की रस्सी बनाते है।

कुछ उथलू बिरहोर अपना घुमन्तुजीवन अभी भी नहीं छोड़े है एक दशक पहले ये लोग मात्र रायगढ़ जिला में निवास करते थे अब ये लोग कोरबा व बिलासपुर जिले में प्रवास कर


Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-06, June 2023

रहने लगे है। घुमन्तु जीवन यापन के कारण आवास स्वास्थ्य, परिवहन, पेयजल शिक्षा एवं अन्य शासकीय योजनाओं का उचित लाभ नहीं उठा पा रहे है। इसीलिए ये लोग पिछड़े हुए है एवं अधिकतर संख्या में कुपोषित रहते है।

## संदर्भ ग्रंथ

census of India (1961,2011): District Census Hand Books and Chhattisgarth Series

हसनैन नदीम (1997) : जनजातीय भारत जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली

निरगुणे बसन्त (2004): आदिवर्त छत्तीसगढ़ की प्रमुख जनजातियॉ महावीर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स इन्दौर

Russel R.N. HiraLal (1916): The Tribes and Custes of The Central Provinces of India

Tiwari D.N. (1984): Primitive Tribes of Madhya Pradesh Govt. India Press Faridabad

तिवारी एस.के,शर्मा श्रीकमल (1994): मध्यप्रदेश की जनजातियॉ समाज एवं व्यवस्था म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल

तिवारी विजय कुमार (2001): छत्तीसगढ़ की जनजातियॉ हिमालया पब्लिशिग हाऊस मुम्बई

त्रिपाठी कौशलेन्द्र चन्द्राकर पुरूषोत्तम (2012) : छत्तीसगढ़ एटलस एस शारदा पब्लिकेशन बिलासपुर (छ.ग.)

निरगुणे बसन्त (2004): आदिवर्त छत्तीसगढ़ की प्रमुख जनजातियॉ महावीर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स इन्दौरे


Copyright @ 2023 Author